THE FINAL REPORT OF THE WORK DONE ON THE PROJECT

1. TITLE OF THE PROJECT:

‘ Dushyant Kumar aur Suresh Bhat ki Gazalon Main Vyangya’

2. NAME AND ADDRESS OF THE PRINCIPAL INVESTIGATOR:

Vijay Manohar Lohar,

Department of Hindi, M. J. College, Jalgaon

3. NAME AND ADDRESS OF THE INSTITUTION: M. J. College, Jalgaon

4. UGC APPROVAL LETTER NO. AND DATE:

F.23-1101 /14 (WRO) 12th Plan) dated. **20/02/ 2015**

5. DATE OF IMPLEMENTATION: 20/02/2015

6. TENURE OF THE PROJECT: From 20/02/2015 to 20/02/2017

7. TOTAL GRANT ALLOCATED: Rs. 2,65,000/-

8. TOTAL GRANT RECEIVED: Rs. 2,37,000/-

9. FINAL EXPENDITURE: Rs. 2, 67, 041/-

10. TITLE OF THE PROJECT:

‘ Dushyant Kumar aur Suresh Bhat ki Gazalon Main Vyangya’

11. OBJECTIVES OF THE PROJECT:

- **व्यंग्य विधा की उपादेयता का अध्ययन करना**
- **भारत में ग़ज़ल की परंपरा का अध्ययन करना**
- **ग़ज़ल जैसी असरदार काव्य विधा का सैद्धांतिक परिचय प्राप्त करना**
- **हिंदी ग़ज़ल और मराठी ग़ज़ल का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत करना**
- **हिंदी के दुष्यंत कुमार और मराठी के सुरेश भट इनकी ग़ज़लों के कथ्य में परिलक्षित व्यंग्य का अध्ययन करना**

12. WHETHER OBJECTIVES WERE ACHIEVED: Yes

13. ACHIEVEMENTS FROM THE PROJECT: Nil

14. SUMMARY OF THE FINDINGS: (IN 500 WORDS)

प्रस्तावना :

वर्तमान युग नूतन संभावनाओं का युग है। भूमंडलीकरण के इस दौर में नए - नए साध्य और साधन से मानवी जीवन प्रभावित है। समय की मांग है कि साहित्य भी नूतन संभावनाओं एवं साध्य से जुड़े। इसी के तहत आज साहित्य लेखन और अनुसन्धान कार्य के नए रूप भी सामने आ रहे हैं। ऐसे में तुलनात्मक पद्धति से विषय का ऊहापोह करना आज भी महत्वपूर्ण है। यदि ग़ज़ल विधा की बात करें तो हिंदी ग़ज़ल और मराठी ग़ज़ल के क्षेत्र में सशक्त जनवादी चेतना का प्रचलन आरम्भ हुआ। दुष्यंतकुमार और सुरेश भट उस चेतना के पुरोधा रहे। उनका व्यक्तित्व आगे के ग़ज़लकारों के लिए दीपस्तंभ साबित हुआ। इसलिए इन दोनों रचनाकारों का व्यक्तित्व जानना और उनकी प्रतिभा के, लेखन के विविधांगी बिंदुओं को समझना शोध विषय की दृष्टि से आवश्यक था। हिंदी और मराठी भाषा के अनेक ग़ज़लकारों ने आजादी के बाद भारतीय जनमानस की समस्याओं को अपनी ग़ज़लों में स्थान दिया। स्वतन्त्र भारत में आधुनिक जीवन पद्धति नूतन समस्याओं की उद् भावना कर रही थी। मूल्य संक्रमण और मूल्य विघटन की आंधी तेज हो रही थी। एक विचित्र -सा माहौल निर्माण हो गया था। हिंदी और मराठी ग़ज़लकारों ने समसामयिक जीवन की विभिन्न हलचलों को व्यंग्य के आधार पर अभिव्यक्त किया। ग़ज़ल में मानवीय सरोकारों, समाज की विडंबनापूर्ण स्थितियों और परिवेश की विसंगतियों को ईमानदारी से उभारा गया। सामान्य जन की परेशानियां, जीवन संघर्ष में जूझते लोग, उनके जीवन की खुरदरी सच्चाईयाँ - कडवाहटें इन ग़ज़लों का प्रमुख कथ्य रहा है। हिंदी ग़ज़लों में गज़लकार दुष्यंत कुमार और मराठी गज़लों में सुरेश भट की रचनाओं का जुड़ाव सीधा आम आदमी के सूख-दुखों से है। उनकी तकलीफों को देखकर द्रवित होते हैं।

हालाँकि सभी जानते हैं साहित्य की विविध विधाओं से संबंधित शोध कार्य हर साल सफलतापूर्वक पूर्ण किए जाते हैं। ग़ज़ल जोकि वर्तमान समय में काफ़ी लोकप्रिय विधा है, उसपर अनुसन्धान बहुत ही कम हो पाया है। फ़ारसी - अरबी साहित्य से आयातित ग़ज़ल भारत की अनेक प्रमुख भाषाओ में स्थापित और लोकप्रिय हो गई है। ऐसे में हिंदी ग़ज़ल और मराठी ग़ज़ल की बात करे तो इन दोनों भाषाओं की ग़ज़लों में सामाजिक,राजनीतिक,धार्मिक,सांस्कृतिक,आर्थिक, शैक्षिक विसंगतियों को बेबाकी से उभारा गया है। इसके लिए ' व्यंग्य ' जैसी असरदार पद्धति को अपनाया गया है। व्यंग्य को लेकर विवेच्य ग़ज़लकारों के अतिरिक्त हिंदी और मराठी के अन्य प्रमुख ग़ज़लकारों को भी विश्लेषित करना जरुरी हो जाता है।

व्यंग्य के माध्यम से जीवन की विसंगतियों को जस-का-तस अनोखे अंदाज में अभिव्यक्त किया जाता है। उससे संभावित खतरें की पहचान होती है, और वर्तमान विसंगतियों के प्रति जागरूकता भी बढ़ती है। एक प्रकार से व्यंग्य को साहित्य में हित भावना का ही पोषक तत्व माना जा सकता है। व्यंग्य को काव्य, नाटक,कहानी आदि की भांति ग़ज़ल में भी अधिकांश रचनाकारों ने अपनाया है। विवेच्य ग़ज़लकारों ने किस प्रकार अपनी प्रतिबद्धता को व्यंग्य के माध्यम से ग़ज़लों में उतारा है, यह भी अध्ययन की दृष्टि से काफी दिलचस्प और जिज्ञासावर्धक है।

निष्कर्ष :

- व्यंग्य की अपनी स्वतन्त्र शक्ति विद्यमान है, जिससे तमाम विसंगत स्थितियों का पर्दाफाश किया जा सकता है।
- व्यंग्य की एक सैद्धांतिक परिदृश्य भी है, जिसमें उसके तत्वों को, महत्त्व तथा उपयोगिता को समाहित किया जा सकता है।
- व्यंग्य मनुष्य की दुर्बलताओं को आईना दिखने का कार्य करता है।

- हिंदी ग़ज़लों के स्वभाव के अनुरूप उसमें व्यंग्यधर्मिता अधिक मिलती हैं। जिसके पुरोधा दुष्यंत कुमार रहे। उनके 'साये में धूप' की गज़लें व्यंग्यपूरित हैं।
- मराठी ग़ज़लों में हिंदी ग़ज़लों की अपेक्षा संख्या और परिणाम की दृष्टि से व्यंग्य प्रयोग की मात्रा कम रही है।
- सुरेश भट की ग़ज़लों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा जातिगत-धर्मगत विसंगतियों पर तीखे व्यंग्य मिलते हैं।
- हिंदी ग़ज़ल वास्तव में ग़ज़ल की रवायती प्रवृत्तियों से अलग रही है।हालांकि उसमें भी प्रारंभ में उर्दू ग़ज़ल के प्रभाव स्वरूप इश्क, साकी, खुमारी आदि के चित्र प्रस्तुत किए गए परन्तु आधुनिक काल में हिंदी ग़ज़ल की सुरत और सीरत दोनों बदल गई। इसके पुरोधा दुष्यंत कुमार रहे।
- मराठी ग़ज़ल को सही मायनों में स्थापित करने का महती कार्य कविवर्य सुरेश भट के माध्यम से हुआ। उन्होंने ग़ज़ल के सही ढाँचे और स्वभाव से सबको परिचित कराया।
- दुष्यंत कुमार सामाजिक और राजनीतिक विसंगति, विडंबना तथा विषमता पर व्यंग्यात्मक शैली में कुठाराघात करते नजर आते हैं। उनकी अनेक गज़लों में यह भाव स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है।
- सुरेश भट मराठी ग़ज़ल को आम आदमी की पीड़ा,आशा-आकांशा, हास-परिहास, जद्दोजहद और अस्तित्व के साथ जोड़ा है। उन्होंने भी सामाजिक तथा राजनीतिक विद्रूपताओं पर करारे व्यंग्य किए हैं।
- देश की न्याय व्यवस्था में जो खोखलापन नजर आ रहा था उसको लेकर दुष्यंत कुमार और सुरेश भट दोनों भी इस व्यवस्था पर सवाल उठाते हैं।
- दुष्यंत कुमार ने धर्मगत और सांप्रदायिक संकीर्णता पर कटु व्यंग्य किये गए हैं।
- दुष्यंत कुमार सभी प्रकार की कट्टरता के विरोधी नजर आते हैं।

- सुरेश भट तो अपनी ग़ज़लों के द्वारा देशवासियों को धर्म, भाषा, प्रान्त के नाम पर बरगलाने वाले तत्वों की कटु आलोचना करते हैं।
- दुष्यंत कुमार और सुरेश भट दोनों ग़ज़लों से यही दृष्टिगोचर होता है कि, अपने देश में अमन, भाईचारा और सोहार्द बना रहे।
- दुष्यंत कुमार और सुरेश भट समाज की अमीरी और गरीबी की खाई को देखकर इसके लिए जिम्मेवार तत्वों पर करारे व्यंग्यबाण चलाते हैं।
- आधुनिक काल में जो मूल्यहीनता हैं, अजनबीपन, ढोंग, आपसी स्वार्थ , कुंठा, संवादहीनता पर भी दुष्यंत कुमार और सुरेश भट दोनों ने व्यंग्यबाण चलायें हैं।

15. CONTRIBUTION TO THE SOCIETY

इस लघु शोध द्वारा निम्न बातें निकल कर आती है, जो सामाजिक दृष्टि से जरुरी है।

- व्यंग्य के अध्ययन से जनता को समाज की स्थिति को बिगाड़ने वाले तत्वों से की सावधान किया जा सकता है।
- ग़ज़ल की परंपरा और तत्वों जैसे शेर, रदीफ़-काफिया,बहर आदि के अध्ययन से आनन्द की प्राप्ति हो सकती है।
- देश और समाज के विकास में बाधा उपस्थित करने वाले तत्वों की पहचान हो सकती है।
- व्यंग्य, ग़ज़ल, हिंदी ग़ज़ल, मराठी ग़ज़ल, दुष्यंत कुमार या सुरेश भट पर और दूसरे कोण से शोध करने वालों का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

16. WHETHER ANY PH.D. ENROLLED/PRODUCED OUT OF THE PROJECT:

No

17. NO. OF PUBLICATIONS OUT OF THE PROJECT: 1

PRINCIPAL INVESTIGATOR **PRINCIPAL**

PRINCIPAL
M.J.College,Jalgaon
(Autonomous)